# 3

# I|Hkkf"kr opu

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने श्रीराम के गुणों के विषय में पढ़ा। इस पाठ में आप सुभाषित के माध्यम से सद्वचनों को जान पायेंगे। सुभाषित के माध्यम से कोई संदेश अधिक प्रभावी तरीके से पहुँचाया जा सकता है। यहाँ पर कुछ सुभाषित के माध्यम से नैतिक मूल्यों पर प्रकाश डाला गया है।

## mÌ';

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगेः

- मूल्य–आधारित श्लोकों का अर्थज्ञान कर पाने में;
- स्वयं को प्रेरित कर पाने में;
- श्लोकों का उच्चारण कर पाने में; और
- दिये गये नैतिक मूल्यों को अपने व्यक्तित्व में समाहित कर पाने में।

## I|Hkkf"kr opu

### 3.1 i|Fkek'k

1. m|eu fg fl/;fUr dk;kf.k u eukjFk% A

u fg l|irL; fl|gL; çfo'kfUr e|[k exk% AA

vUo;% &dk;kf.k m|eu fg fl/;fUr u eukjFk% ¼fl/;fUr½A l|irL; fl|gL; e|[k exk% u fg çfo'kfUr A

HkkokFk% कोई भी कार्य प्रयास करने से सिद्ध होता है न कि केवल मनोकामना करने से। जैसे सोते हुए सिंह के मुहँ में हिरण प्रवेश नही करता, बल्कि हिरण के शिकार के लिए सिंह को प्रयास करना पड़ता है उसी तरह, प्रयास से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

2- vyl L; d|rk fo|k vfo|L; d|rk /kue~ A

v/kuL; d|rk fe=e~ vfe=L; d|r% l|[ke~ AA

vUo;% &vylL; fo|k d|r% ¼Hkofr½] vfo|L; /ku d|r% ¼Hkofr½] v/kuL; fe= d|r% ¼Hkofr½] vfe=L; l|[k d|r% ¼Hkofr½ AA

HkkokFk% आलसी व्यक्ति को विद्या कहाँ? जिसके पास विद्या नही उसके पास धन कहाँ? जिसके पास धन नही उसके पास मित्र कहाँ और जिसके पास मित्र नहीं, उसके पास सुख कहाँ? अर्थात व्यक्ति को आलस्य का त्याग करना चाहिए।



fVIi.kh

d{kk & VI

fVIi.kh

3- ;fLeu~ ns'ks u lEekuks u o`fÙk% u p cka/ko% A

u p fo|kxe% df'pr~ rn~ ns'ka ifjoT;sr~ AA

vUo;% & ;fLeu~ ns'ks lEeku% u] u o`fÙk%] u p cka/ko% A u p df'pr~ fo|kxe% rn~ ns'ka ifjoT;sr~ AA

HkkokFk% जिस प्रदेश में न सम्मान मिलता हो, न आजीविका के साधन हों, न बंधुजन हो और न ही ज्ञान का अर्जन हो, उस प्रदेश को तुरंत छोड देना चाहिए।

'kCnkFk%

- उद्यमेन – परिश्रमेण
- सिध्यन्ति – सफलतां प्राप्नोति
- सुप्तः – शयनं प्राप्तः
- शत्रुः – वैरी
- अविद्यः – अज्ञानी
- कुतः – कस्मात्, कथम्
- सम्मानः – गौरवम्
- वृत्तिः – जीविका
- परिवर्जयेत् – त्यजेत्

## l|Hkkf"kr opu

### 3.2 f}rh;k'k

4. 'kkfUrrqY;a rik ukfLr u lUrks"kkRija lq[ke~ A

u r".kk;k% ijks O;kf/k% u p /keksZ n;kij% AA

vUo;% & 'kkfUrrqY;a rik ukfLr] lUrks"kkRija lq[ke~ u A r".kk;k% ijks O;kf/k% u] u p /keksZ n;kij%A

HkkokFkZ% शांति के तुल्य कोई तप नहीं, संतोष से बढकर सुख नहीं, लालच/तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं और दयाशीलता से बढ़कर कोई धर्म नही।

5. –f"Vira U;lsr~ ikna oL=ira tya ficsr~ A

'kkL=ira onsn~ okD;a eu% ira lekpjsr~ AA

vUo;% & –f"Vira ikna U;lsr~] oL=ira tya ficsr~ A 'kkL=ira okD;a onsn~] eu% ira lekpjsr~ A

HkkokFkZ% दृष्टिपात करने के बाद कदम रखने चाहिए, वस्त्र से छानकर जल पीना चाहिए। शास्त्र (सत्य) के आलोक में कोई बात कहनी चाहिए और सचेत मन के अनुसार ही कोई आचरण करना चाहिए।

**6- x.kk Hk"k;r : i 'khy Hk"k;r dye A**

**f l f ) Hk"k;r fo|k Hkkxk Hk"k;r /kue AA**

**vUo;% & x.kk : i Hk"k;r] 'khy dye Hk"k;r A f l f )% fo|k Hk"k;r] Hkkxk /kue Hk"k;r AA**

**HkkokFk%** रूपशीलता को गुण भूषित्व करते हैं, कुल का भूषण शील होता है। सिद्धि अर्थात् सफलता विद्या का अलंकरण होती है और धन का सतुलित प्रयोग ही सम्पन्नता का भूषण होता है।

**'kCnkFk%**

- शान्तितुल्यम् – समाधानसदृशम्
- तपः – व्रतम्
- तृष्णा – आशा
- दया – करुणा
- दृष्टिपूतम् – दर्शनमात्रम्
- पूतम् – पवित्रम्
- शास्त्रपूतम् – शास्त्रसम्मतम्
- समाचरेत् – आचरेत्
- भूषयते – अलङ्करोति
- शीलम् – आचरणम्

## I|Hkkf"kr opu



## ikBxr iz'u& 3-1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
   1. कार्याणि केन सिध्यन्ति?
   2. कस्य मित्रं न भवति?
   3. वाक्यं कथं भवेत्?
   4. रूपं कः भूषयति?

## vkiu D;k lh[kk\

- नैतिकमूल्य आधरित श्लोकों का अध्ययन।
- संस्कृत के नवीन शब्दों का ज्ञान।

## ikBkr iz'u

1. एक वाक्य में उत्तर दीजिए –

   (i). कुलं किं भूषयते?

   (ii). कीदृशं वाक्यं वदेत्?

   (iii). रूपं किं भूषयते?

(iv). केन कार्याणि सिध्यन्ति?

(v). कस्य सुखं नास्ति?

(vi). कीदृशं देशं परिवर्जयेत्?

(vii). कीदृशं तपः नास्ति?

2. नीचे दिये गये चित्रों को देखकर प्रत्येक के विषय में पाँच–पाँच संस्कृत वाकयों का निर्माण कीजिये



(i)

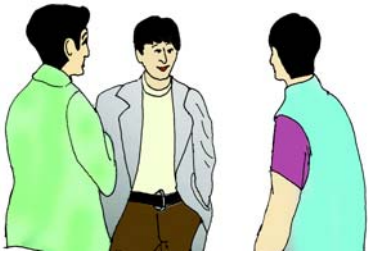



(ii)

3. पाठ में दिये गये श्लोकों को याद कर उनकों स्वयं से यहाँ लिखिए–

(i). ..................................................................................

(ii). ..................................................................................

(iii). ..................................................................................

(iv). ..................................................................................

(v). ..................................................................................

## mÙkjekyk

3.1

1. उद्यमेन
2. अधनस्य
3. शास्त्रपूतम्
4. गुणः